❋ 17 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बहुत हैं जो अपनी वृत्ति सच नहीं बताते, लज्जा आती है। जैसे कोई उल्टा काम करते हैं तो सर्जन को बताते नहीं हैं, परन्तु छिपाने से बीमारी और ही वृद्धि को पायेगी। यहाँ भी ऐसे हैं। बाप को बताने से हल्के हो जाते हैं। नहीं तो वह अन्दर में रहने से भारी रहेंगे। बाप को सुनाने से फिर दुबारा ऐसे नहीं करेंगे। आगे के लिए अपने पर खबरदार भी रहेंगे। बाकी बतायेंगे नहीं तो वह वृद्धि को पाना रहेगा।

2] पवित्रता की ही मुख्य बात है। मनुष्यों को यह पता नहीं है कि सतयुग में देवता पवित्र थे। वह तो समझते हैं देवताओं को भी बच्चे आदि हुए हैं, परन्तु वहाँ योगबल से कैसे पैदाइस होती है, यह किसको भी पता नहीं है। कहते हैं सारी आयु ही पवित्र रहेंगे तो फिर बच्चे आदि कैसे होंगे। उन्हों को समझाना है इस समय पवित्र होने से फिर हम 21 जन्म पवित्र रहते हैं।

3] आत्मा ही कर्म विकर्म करती है। यह शरीर कोई काम का नहीं है। तो मुख्य बात अपने को आत्मा समझना चाहिए। जो समझे बरोबर सब कुछ आत्मा करती है। अभी तुम सब आत्माओं को वापिस जाना है तब ही यह ज्ञान मिलता है। फिर कभी यह ज्ञान मिलेंगा नहीं।

4] देखना है हम आत्मा सारे दिन में कोई भी बेकायदे काम तो नहीं करते हैं। कोई भी ऐसी आदत हो तो फौरन छोड़ देना चाहिए। परन्तु माया फिर भी दूसरे-तीसरे दिन भूल करा देती है। ऐसी सूक्ष्म बातें चलती रहती हैं, यह है सब गुप्त ज्ञान।

5] बाबा हमेशा कहते हैं– मांगने से मरना भला। सहज मिले सो दूध बराबर, मांग लिया सो पानी। मांग कर कोई से लेते हो तो वह लाचारी काशी कलवट खाकर देते हैं, तो वह पानी हो जाता है। खींच लिया वह रक्त बराबर..... कई बहुत तंग करते हैं, कर्जा उठाते हैं तो वह रक्त समान हो जाता है।

❋ योग-

1] हर एक को अपने को देखना है कि मैं कहाँ तक याद करता हूँ? कोई के नाम-रूप में कहाँ तक फँसा हुआ हूँ? हमारे आत्मा की वृत्ति कहाँ-कहाँ तक जाती है? आत्मा खुद जानती है, अपने को आत्मा ही समझना पड़े। हमारी वृत्ति एक शिवबाबा की तरफ जाती है या और कोई के नाम-रूप तरफ जाती है? जितना हो सके अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करना है और सब भूलते जाना है। अपनी दिल से पूछना है कि हमारी दिल सिवाए बाप के और कहाँ भटकती तो नहीं हैं?

❋ धारणा-

1] नाम-रूप की बीमारी को समाप्त करने के लिए एक बाप से सच्चा-सच्चा लव रखो। याद के समय बुद्धि भटकती है, देहधारी में जाती है तो बाप को सच-सच सुनाओ। सच बताने से बाप क्षमा कर देंगे। सर्जन से बीमारी को छिपाओ नहीं। बाबा को सुनाने से खबरदार हो जायेंगे। बुद्धि किसी के नाम रूप में लटकी हुई है तो बाप से बुद्धि जुट नहीं सकती। वह सर्विस के बजाए डिससर्विस करते हैं। बाप की निंदा कराते हैं। ऐसे निंदक बहुत कड़ी सज़ा के भागी बनते हैं।

❋ सेवा-

1] मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। यह बात तुम किसको भी सुनायेंगे तो अन्दर में लगेगा। अब पतित से पावन कैसे बनेंगे? जरूर बाप को याद करना होगा। और संग बुद्धि योग तोड़ एक संग जोड़ना है तब ही मनुष्य से देवता बन सकेंगे। ऐसे समझाना चाहिए।

2] असमर्थ आत्माओं को समर्थी दो तो उनकी दुआयें मिलेंगी।